# केट शेली और
# आधी रात की ट्रेन



मार्गरेट वेटर

चित्र: करेन रिट्ज

# केट शेली और
# आधी रात की ट्रेन



मार्गरेट वेटर

चित्रः करेन रिट्ज

## लेखक का नोट

कैथरीन कैरोल शेली, "केट," का जन्म 25 सितंबर, 1865 को आयरलैंड में हुआ था. इससे पहले कि वो एक वर्ष की हुई उसके माता-पिता उसे अमेरिका ले आए. उन्होंने आयोवा के मोइंगोना शहर के पास एक छोटा सा फार्म खरीदा. केट के पिता ने शिकागो और उत्तर-पश्चिमी रेलमार्ग लाइन से दिखने वाली हनी क्रीक के सामने अपना घर बनाया और वहीं पर खेती की. उन्होंने रेलवे में भी नौकरी की.

केट के बाद, उनके चार और बच्चे हुए, जेम्स, मेमे, मार्गरेट और जॉन. शेली के घर में जीवन कठिन लेकिन संतोषजनक था. घर हमेशा अच्छे दोस्तों और खुशियों से भरा रहता था.

जब केट 13 वर्ष की हुई, तब उसके पिता की मृत्यु हो गई. एक साल से भी कम समय के बाद, 10 वर्षीय जेम्स डेस, मोइनेस नदी में डूब गया. मिसेस शेली वास्तव में इन त्रासदियों से कभी उबर नहीं पाईं. केट ने फार्म चलाने और छोटे बच्चों की देखभाल करने की ज़्यादातर जिम्मेदारी अपने ऊपर ली.

जब डेस मोइनेस नदी घाटी में, एक प्रचंड तूफान आया तब जीवन अधर में लटक गया. फिर केट ने खतरे का सामना करने में संकोच नहीं किया और रात में वो अकेले ही वो उस काम करने निकल पड़ी जिसे वो अपना कर्तव्य मानती थी.





## मोइंगोना,
## आयोवा 6 जुलाई, 1881

पंद्रह वर्षीय केट शेली ने रस्सी पर लटकी चादरें खींच लीं.

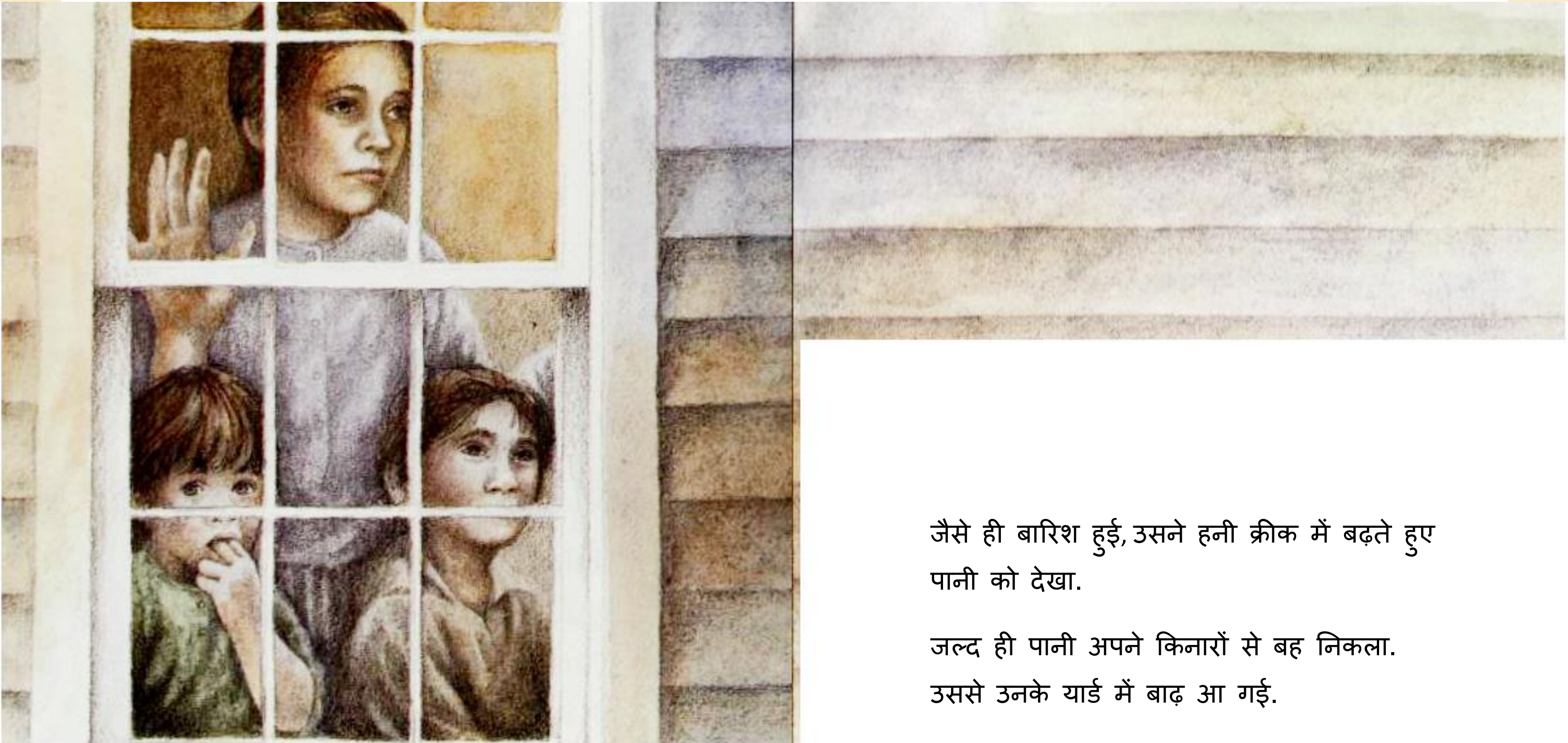
एक भयानक तूफान आ रहा था.

केट तूफान को, हवा में महसूस कर सकती थी.

जैसे ही वो भारी टोकरी को घर लेकर गई, एक ठंडी हवा चली.

फिर काले बादल घिर आए.

और आसमान में अंधेरा छा गया.



केट अपनी छोटी बहनों और भाई के साथ रसोई की खिड़की पर खड़ी थी.

उसने बिजली चमकती हुई देखी.

उसने पहाड़ियों में गड़गड़ाहट सुनी.

फिर तेज़ बारिश आई.

जैसे ही बारिश हुई, उसने हनी क्रीक में बढ़ते हुए पानी को देखा.

जल्द ही पानी अपने किनारों से बह निकला. उससे उनके यार्ड में बाढ़ आ गई.

"मैं जानवरों को खलिहान से बाहर निकालने जा रही हूँ," केट ने कहा.

"अगर पानी इसी तरह बढ़ता रहा, तो जानवर डूब सकते हैं."

"सावधान रहना, पानी में फिसलना मत," माँ ने चेतावनी दी.



केट पहाड़ी से नीचे भागी.

वो कीचड़ भरे पानी से निकलकर खलिहान में गई.

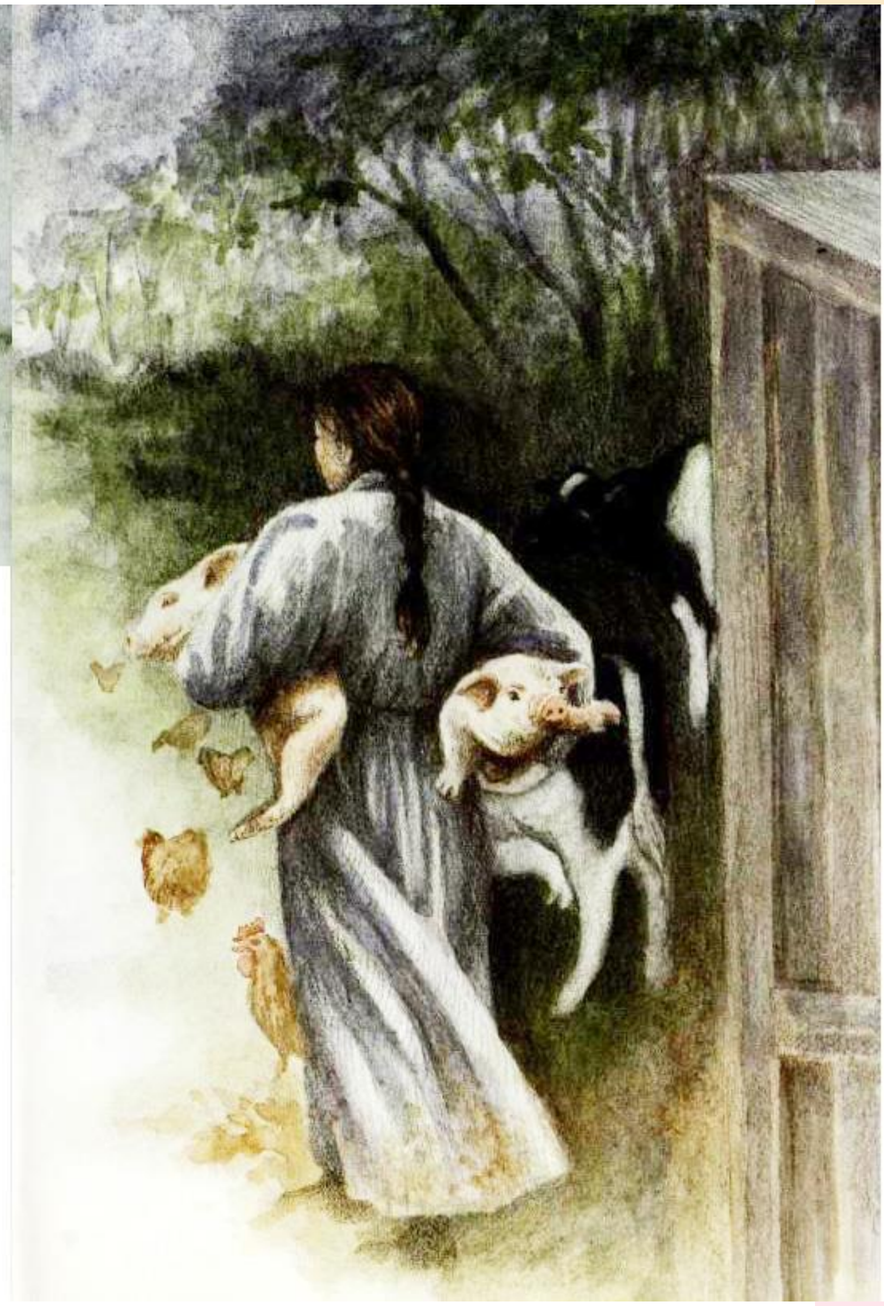
उसने दोनों घोड़ों को बाहर निकाला और उन्हें ऊँचे स्थान पर भगा दिया.

उसने गायों को एक पहाड़ी पर चढ़ा दिया.

फिर वो वापस खलिहान में गई.

उसने कुछ सूअर के बच्चे उठाए और उन्हें घर में ले गई.

इस समय तक, वो पूरी तरह से भीग चुकी थी.



केट ने सूखे कपड़े पहने और वापस खिड़की पर खड़ी हो गई.

लेकिन बारिश ने पीछा नहीं छोड़ा.

बाढ़ का पानी घर के करीब आने लगा.

जब बिजली चमकी, तो केट को रेल की चमचमाती पटरियाँ दिखाई दीं.

पटरियाँ, हनी क्रीक के दूसरी ओर थीं.

केट बारिश में से झाँककर हनी क्रीक पर रेल पुल को देखने की कोशिश की.

इस तूफान में पुल कैसे टिका था?



खाना खाने के बाद छोटे बच्चे सोने चले गए.

नौ साल की मेमी, मां और केट के साथ जगी रहना चाहती थी.

सब लोग किचन टेबल पर बैठक तूफान के खतरों के बारे में बातें करते रहे.

वे रेलवे में काम करने वाले लोगों के बारे में चिंतित थे.

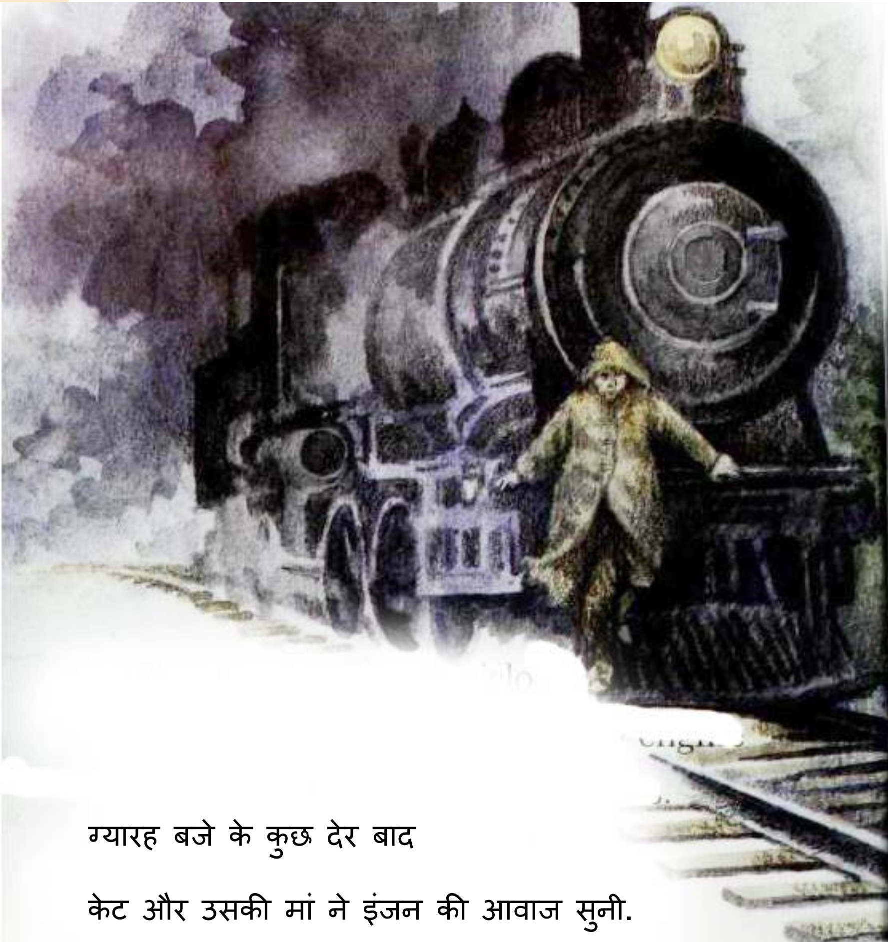
आधी रात को, एक एक्सप्रेस ट्रेन बिना रुके मोइगोना स्टेशन से गुजरेगी.

ट्रेन डेस मोइनेस नदी पर बने लंबे पुल को पार करेगी.

फिर ट्रेन केट के घर के पास हनी क्रीक पर बने पुल को पार करेगी.

क्या पुल सुरक्षित था?





ग्यारह बजे के कुछ देर बाद

केट और उसकी मां ने इंजन की आवाज सुनी.

इंजन पटरियों पर धीरे-धीरे चल रहा था.

एक्सप्रेस ट्रेन के आने से पहले रेलकर्मी पटरियों और पुलों की जांच कर रहे थे.

रेलकर्मी, हनी क्रीक पर बने पुल की ओर जा रहे थे.

अचानक, इंजन की सीटी बेतहाशा बज उठी.

तब केट ने एक भयानक टूटने की आवाज़ सुनी.

वो तुरंत समझ गई कि पुल टूट गया था.



केट ने गर्म इंजन की ठंडे पानी से टकराने वाली फुफकार सुनी.

वो तुरंत कूदी.

"ओह, माँ," केट रोई.

"रेलकर्मी, हनी क्रीक में डूब गए हैं. मुझे उनकी मदद के लिए जाना चाहिए."



हादसे से बच्चों की नींद खुल गई.

बच्चे केट को जैकेट और टोपी पहनते हुए चुपचाप देखते रहे.

फिर केट ने अपने पिता की रेलवे की लालटेन जलाई.





"तुम नहीं जा सकती हो, केट," माँ ने कहा.

"वहां बहुत खतरनाक होगा."

"मुझे जाना ही होगा, माँ," केट ने उत्तर दिया.

"हनी क्रीक में अभी भी कोई आदमी जीवित हो सकता है.

और मुझे आधी रात की एक्सप्रेस ट्रेन को रोकना होगा."

"कृपया, केट," माँ ने कहा.

"मत जाओ. बाढ़ का पानी अब हमारे दरवाजे तक आ गया है."

"अगर वहां हमारे पिता होते, तो क्या हम उनकी मदद करने नहीं जाते?" केट ने पूछा.

"तुम सही कह रही हो," माँ ने अपनी सहमति व्यक्त की.

"अच्छा जाओ, लेकिन सावधान रहना! हम तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगे."

टूटे पुल तक जाने के लिए केट बाढ़ वाले यार्ड को पार नहीं कर सकी.

उसके बजाए, उसने अपने घर के पीछे का रास्ता चुना.

वहां से वो उन पटरियों पर पहुँचती जो पहाड़ियों तक जाती थीं.



पहाड़ी के नीचे पानी बह रहा था.

केट गिरे हुए पेड़ों के ऊपर से चढ़कर गई.

उसकी स्कर्ट गीली झाड़ियों में फंस गई.

उसके जूते कीचड़ में धंस गए.

लेकिन उसने अपने पिता की लालटेन अपने सामने रखी और लगातार चलती रही.

आखिर वो पटरियों पर पहुंची.



केट पटरियों के साथ-साथ टूटे हुए पुल की ओर दौड़ी.

उसने हनी क्रीक के गहरे पानी को देखा.

वो इंजन या चालक दल के किसी भी व्यक्ति को नहीं देख पाई.

क्या वे सब डूब गए थे?

तब केट को एक चिल्लाहट सुनाई दी.

तूफान की गर्जना में उसे इस बात पर यकीन नहीं हो रहा था.

लेकिन उसने फिर से सुना.

हाँ. कोई बुला रहा था.



बिजली चमकी.

केट ने किसी को पानी के ऊपर एक पेड़ की चोटी की शाखाओं को पकड़े हुए देखा.

गड़गड़ाहट हुई.

जैसे ही गर्जन फीकी पड़ी, केट ने फिर से आवाजें सुनीं.

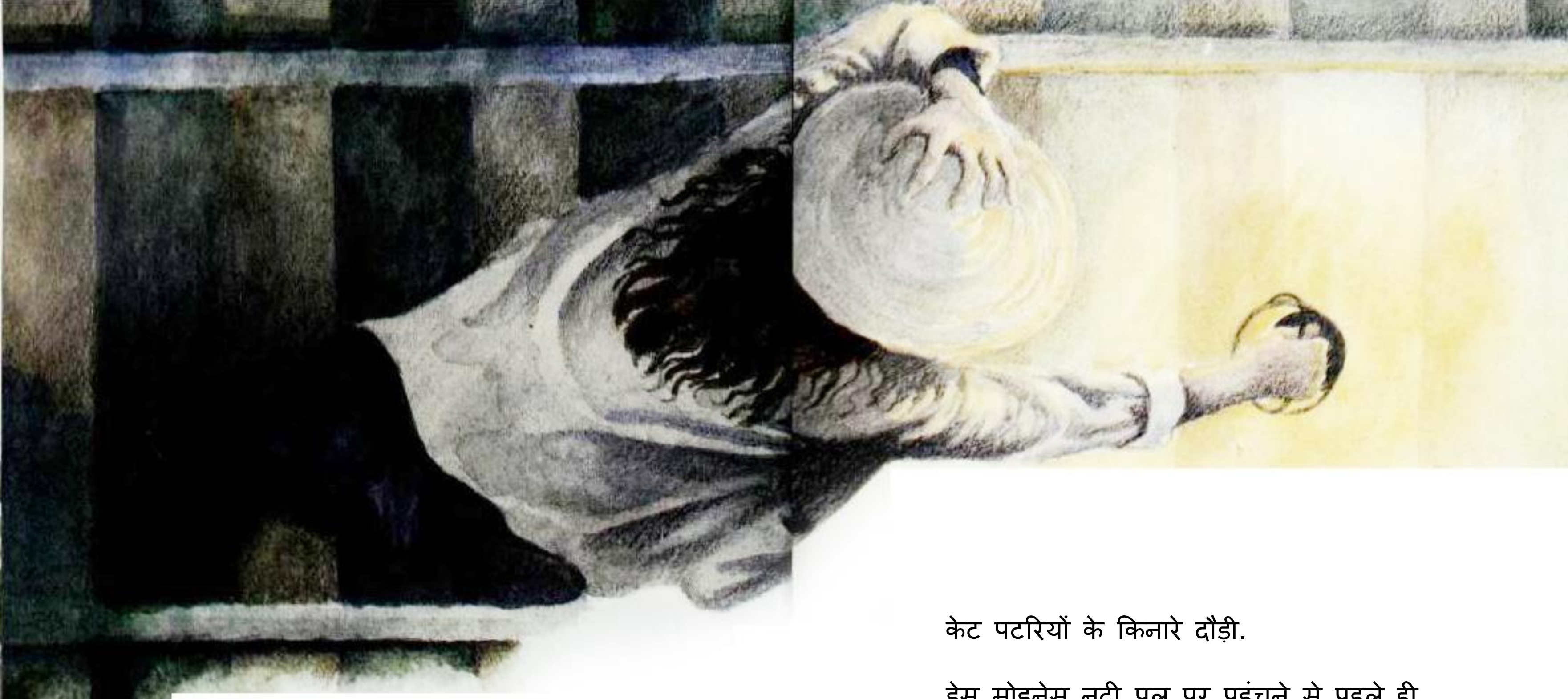
अब वो दो आदमियों की आवाजें सुन सकती थी, लेकिन वो तूफान में उनके शब्दों को समझ नहीं पाई थी.

"रुको! रुको!" केट चिल्लाई. "मैं मदद लेकर वापिस आऊंगी."

केट ने लालटेन को आगे-पीछे घुमाया.

उससे लोगों को पता चला कि उसने उन्हें सुना था और वो मदद ला रही थी.





केट, मोइनगोना स्टेशन की ओर दौड़ने लगी.

उसके पास ज्यादा समय नहीं था.

आधी रात से पहले, एक्सप्रेस ट्रेन के आने से पहले उसे स्टेशन पहुंचना था.

केट पटरियों के किनारे दौड़ी.

डेस मोइनेस नदी पुल पर पहुंचने से पहले ही,

उसे बाढ़ के पानी की तेज आवाज सुनाई दी.

उसने पुल पर अपना रास्ता रोशन करने के लिए लालटेन को पकड़कर रखा था.

लेकिन जैसे ही वो आगे बढ़ी तेज हवा ने, लालटेन की छोटी लौ को बुझा दिया.

केट ने अंधेरे में देखा.

मोइनगोना स्टेशन तक पहुँचने के लिए उसे नदी को पार करना था.

उसके सामने लंबा लकड़ी का पुल फैला हुआ था.

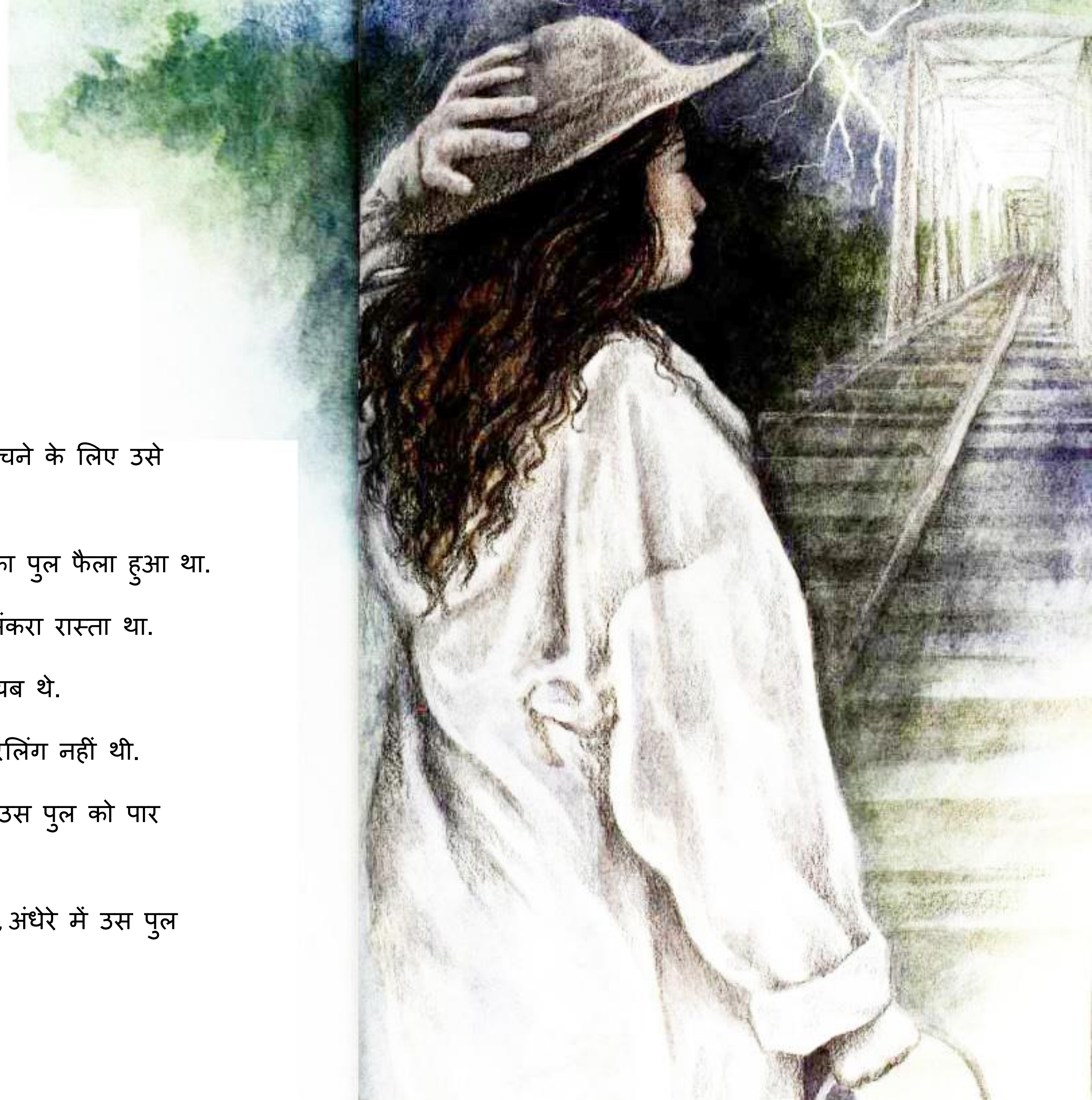
पटरियों के बगल में एक संकरा रास्ता था.

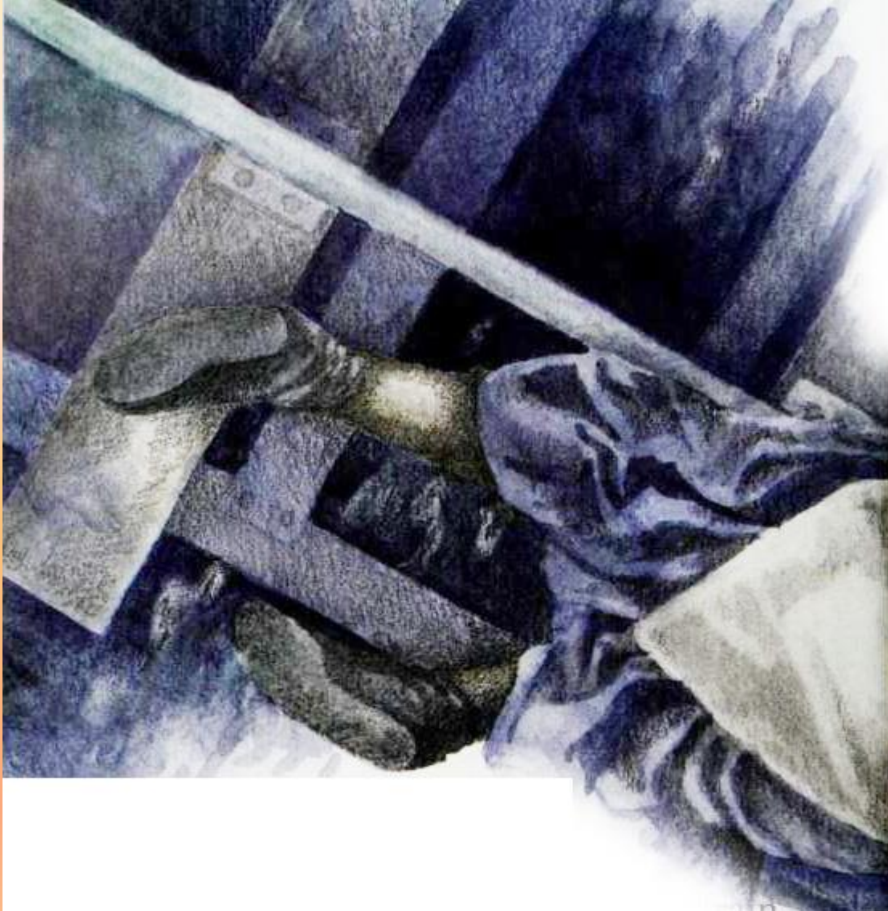
लेकिन उसके कुछ बोर्ड गायब थे.

वहां पकड़ने के कोई लिए रेलिंग नहीं थी.

केट दिन के उजाले में भी उस पुल को पार करने से डरती थी.

क्या वो अब इस तूफान में, अंधेरे में उस पुल को पार कर सकती थी?





केट ने हनी क्रीक में रेलकर्मियों के बारे में सोचा.

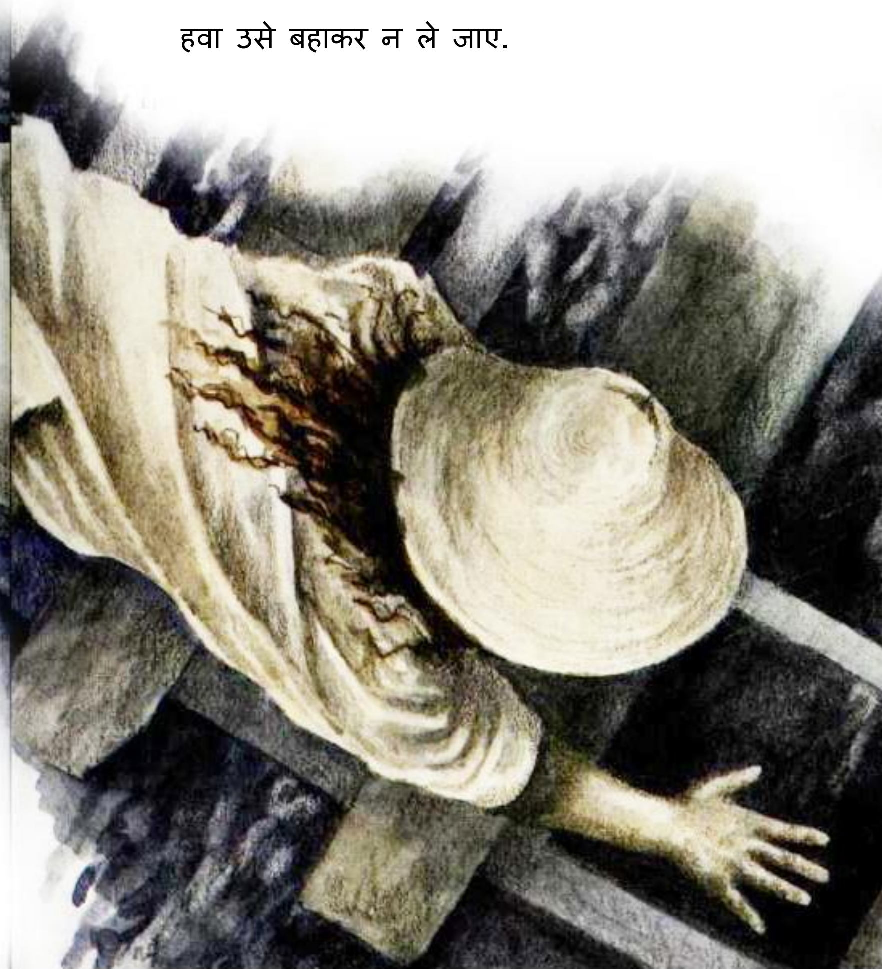
उसने ट्रेन में सवार सभी लोगों के बारे में सोचा जो टूटे हुए पुल की ओर तेजी से आ रहे थे.

फिर वो अपने हाथों और घुटनों के बल बैठी और रेंगने लगी.

केट ने अपने हाथों से पुल में गैप या खाली स्थानों को महसूस किया, ताकि वो खुद नीचे न गिरे.

कीलों और लकड़ी के धारदार किनारों से उसके हाथ और घुटने कट गए और उसकी स्कर्ट फट गई.

उसने पटरियों की स्टील रेल को पकड़े रखा ताकि हवा उसे बहाकर न ले जाए.



बाढ़ वाली नदी के पेड़ और लट्ठे पुल से टकराए थे जिससे वो हिल गया था.

जब वो पुल के बीच पहुंची, तो अचानक रात में बिजली की तेज चमक ने उसका रास्ता रोशन कर दिया.

उसने ऊपर देखा.

एक विशाल वृक्ष नदी में बहकर सीधे उसकी ओर आ रहा था.

निश्चित रूप से वो पेड़ पुल से जाकर टकराएगा. केट ने अपनी आँखें बंद कर लीं और प्रार्थना करने लगी.





अगले ही पल नदी ने पेड़ को पानी के नीचे खींच लिया.

केट ने लकड़ी की वॉकवे के नीचे पेड़ को खुरचते हुए महसूस किया.

फिर पेड़ बह गया.

केट डर से काँप रही थी, लेकिन वो आराम करने के लिए रुक नहीं सकती थी.

उसे पता था कि अब लगभग आधी रात होने वाली थी.

उसे आधी रात की एक्सप्रेस ट्रेन के आने से पहले स्टेशन पहुंचना था.

आखिर केट का हाथ जमीन से छुआ.

वो नदी पार कर चुकी थी.

मोइंगोना स्टेशन अब आधा मील से भी कम दूर था.

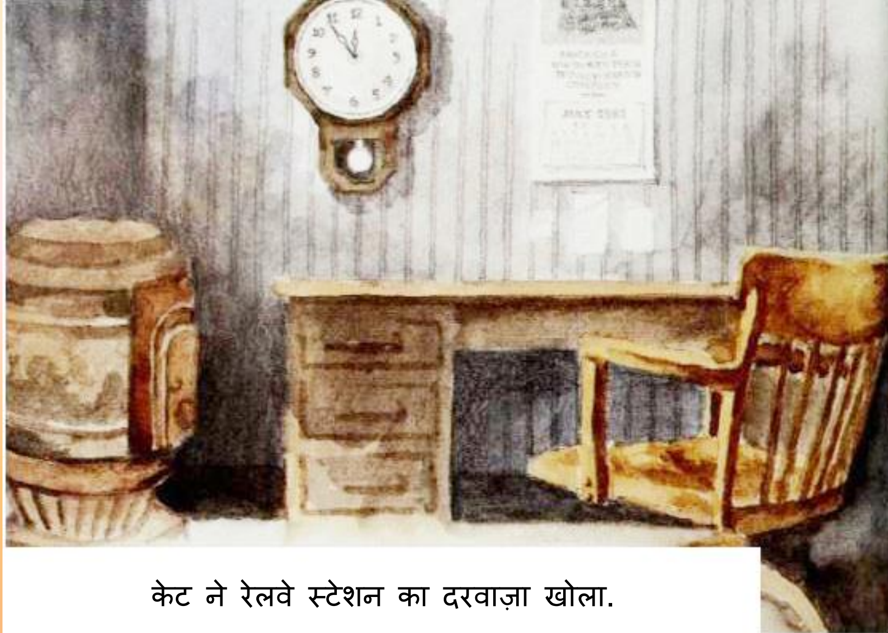
फिर वो अपने पैरों पर खड़ी होकर दौड़ने लगी.

उसका दिल धड़कने लगा.

उसके गले में दर्द होने लगा.

लेकिन बारिश में उसे फिर स्टेशन की रोशनी नजर आई.





केट ने रेलवे स्टेशन का दरवाज़ा खोला.

अंदर बैठे लोग मुड़े और उसे घूरने लगे.

केट के कपड़े फटे और मैले थे.

उसकी पुरानी टोपी से पानी टपक रहा था.

उसने बोलने की कोशिश की, लेकिन उसके मुंह से एक शब्द भी बाहर नहीं निकला.

अंत में, वो हांफने लगी,

“हनी क्रीक में इंजन नीचे गिर गया है.

एक्सप्रेस ट्रेन को रोको."

उसके बाद केट फर्श पर गिर पड़ी.



"वो लड़की ज़रूर पागल होगी," किसी ने कहा.

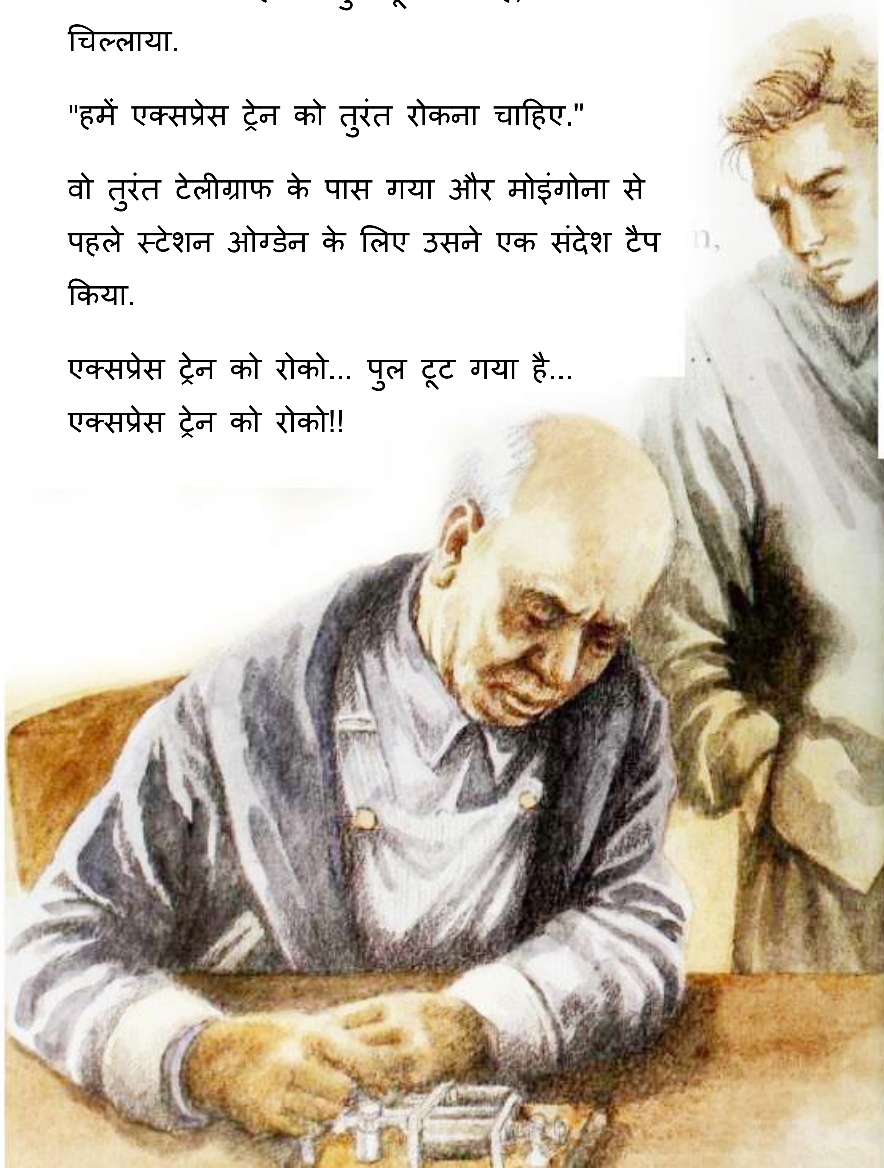
लेकिन स्टेशन का एजेंट केट को जानता था.

"उसका मतलब है कि पुल टूट गया है," वो चिल्लाया.

"हमें एक्सप्रेस ट्रेन को तुरंत रोकना चाहिए."

वो तुरंत टेलीग्राफ के पास गया और मोइंगोना से पहले स्टेशन ओग्डेन के लिए उसने एक संदेश टैप किया.

एक्सप्रेस ट्रेन को रोको... पुल टूट गया है... एक्सप्रेस ट्रेन को रोको!!



दूसरे आदमी ने एक लालटेन पकड़ी.

उसके बाद वो प्लेटफार्म की ओर भागा.

यदि टेलीग्राफ संदेश नहीं पहुँचता तो वो एक्सप्रेस ट्रेन को लाल झंडी दिखाकर रोक सकता था.

दो सौ लोगों के साथ एक्सप्रेस, अभी भी टूटे हुए पुल की ओर तेजी से बढ़ रही थी.








लेकिन केट की चेतावनी समय पर आई.

रेलकर्मियों ने ओग्डेन में ही एक्सप्रेस ट्रेन को रोक दिया.

यह उस रात भेजा या प्राप्त किया गया अंतिम टेलीग्राफ संदेश था.

तूफ़ान ने 40 मील तक टेलीग्राफ सेवा को ठप्प कर दिया था.

किसी ने केट को उठाकर कुर्सी पर बिठाया.

फिर किसी ने केट को एक गिलास पानी दिया.

"हनी क्रीक में दो आदमी अभी भी जीवित हैं," केट ने कहा.

"मैंने उन्हें पानी में पेड़ों को पकड़े हुए देखा है."

"चलो हम उन्हें बचाने की कोशिश करें," एक आदमी ने कहा.

"क्या तुम हमारी मदद करोगी, केट?" दूसरे आदमी ने पूछा.

"तुम हमें दिखाना कि वे कहाँ हैं?"



केट ने बचाव दल के साथ इंजन में सवारी की.

उन्होंने डेस मोइनेस नदी पार की

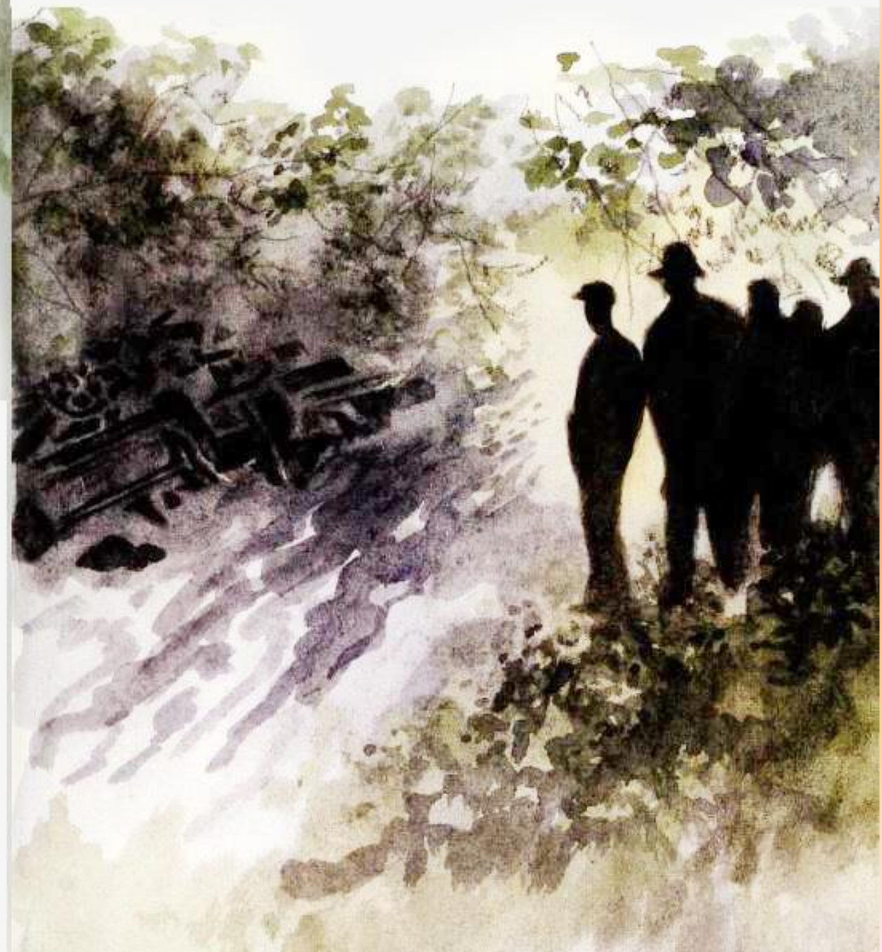
यह वही पुल था जिसपर केट रेंग कर आई थी.

फिर हनी क्रीक के टूटे पुल पर इंजन रुक गया.

सभी लोग मिलकर चिल्लाए, और पानी में फंसे लोगों ने उन्हें जवाब दिया.

वे अभी भी पेड़ों से लटके हुए थे.

लेकिन बाढ़ के कारण उन तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं था.





केट ने अपने घर के पीछे पहाड़ियों में बचाव दल का नेतृत्व किया.

वो उन्हें जंगल के रास्ते ऊपर की ओर एक दूसरे पुल तक ले गई.



वहां पर उन्होंने हनी क्रीक को पार किया,

और अंत में उन्होंने दो फंसे हुए लोगों को बचाया.

## अंत के शब्द

केट घर गई और काफी देर तक सोती रही. जब वो जागी, तो उसके परिवार, दोस्तों और पड़ोसियों ने बड़ी खुशी से उसका स्वागत किया. वे उसके साहसिक कार्य के बारे में सुनना चाहते थे. रिपोर्टर आए. देश भर के अखबारों में लोगों ने उसकी बहादुरी की कहानी पढ़ी. जल्द ही पूरा देश केट शेली के बारे में जान गया. रेलरोड कंपनी ने केट को एक सौ डॉलर और रेलमार्ग पर आजीवन यात्रा करने ले लिए मुफ्त पास दिया. केट के सम्मान में कविताएँ और गीत लिखे गए. आयोवा राज्य ने केट को, एक स्वर्ण पदक से सम्मानित किया.

लेकिन उन्हें दिए गए सभी सम्मानों में से केट को अपने रेलयात्री मित्रों द्वारा दिया सम्मान सबसे अच्छा लगा. जब भी ट्रेन उसके घर के सामने से गुज़रती थी, तो वे ट्रेन को ठीक उसके घर के सामने रोकते थे जिससे केट वहाँ उतरकर जल्दी अपने घर पहुँच सके!

